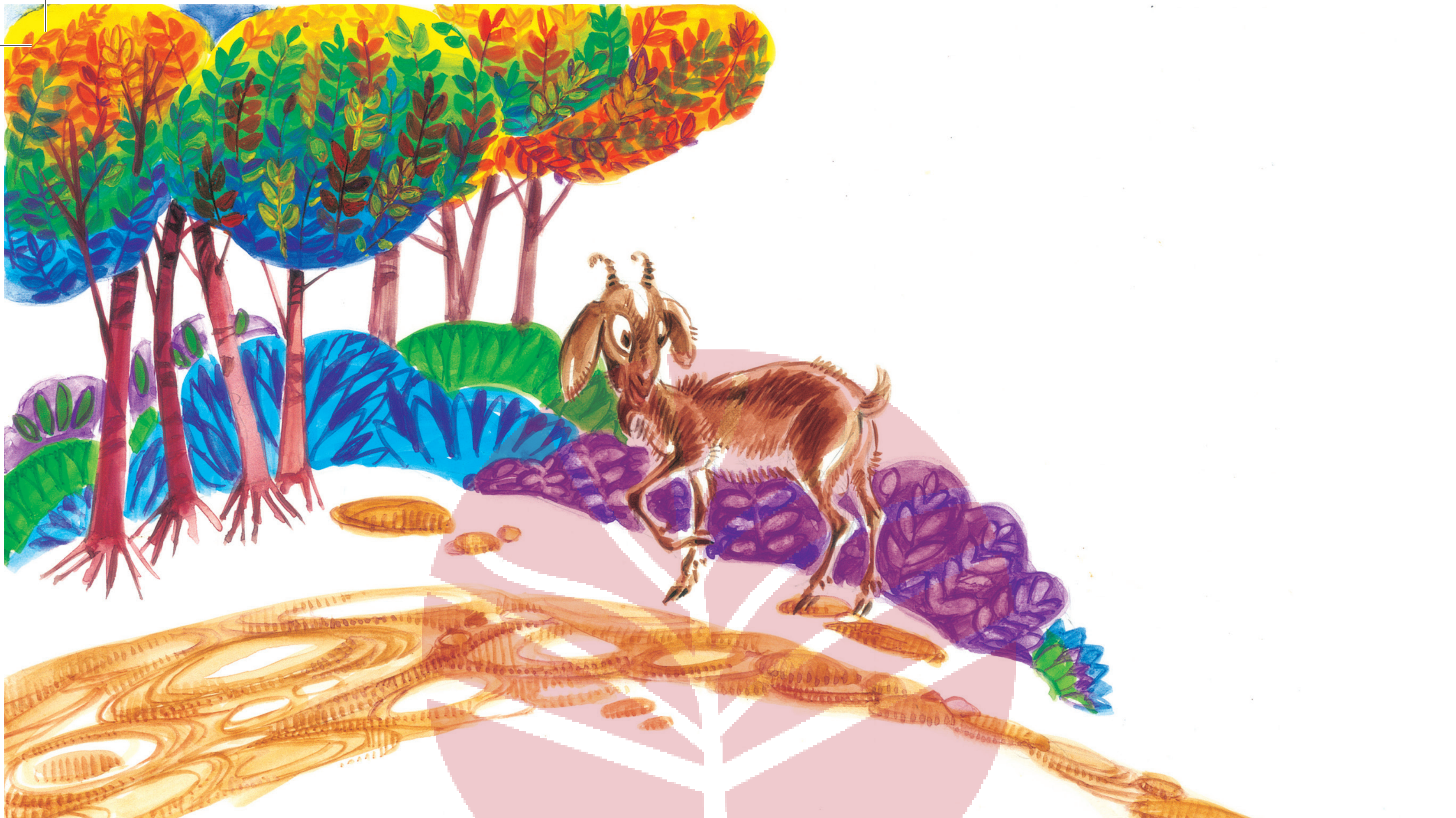


इस पुस्तक के चित्र राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा गोवा में 26-30 जून 2012 तक आयोजित कार्यशाला में तैयार किए गए है।

ISBN 978-81-237-6824-3

पहला संस्करण : 2013

पहली आवृत्ति : 2018 (*शक* 1940)

Who is Sharper? *(English Original)*

Koun Sayana *(Hindi)*

₹ 45.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

कौन सयाना ?

गुणमणि दास

चित्र

दुर्लभ भट्टाचार्जी

अनुवाद

पंकज चतुर्वेदी



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA



एक बार की बात है, एक नदी के बीचों-बीच टापू पर एक लोमड़ी रहती थी। नदी की बाढ़ में बह कर आए छोटे जानवरों को खाकर वह अपना पेट भरती थी।



एक दिन नदी की धारा के साथ बह कर एक बकरी और बहुत से छोटे-छोटे खरगोश टापू पर आ गए। यह देखकर लोमड़ी की बाँछें खिल गईं। उसने खरगोशों को एक-एक कर पकड़कर खाना शुरू कर दिया। बकरी यह सब कुछ देख रही थी। उसे लोमड़ी का भय सता रहा था। डर के मारे उसकी नींद उड़ गई थी।



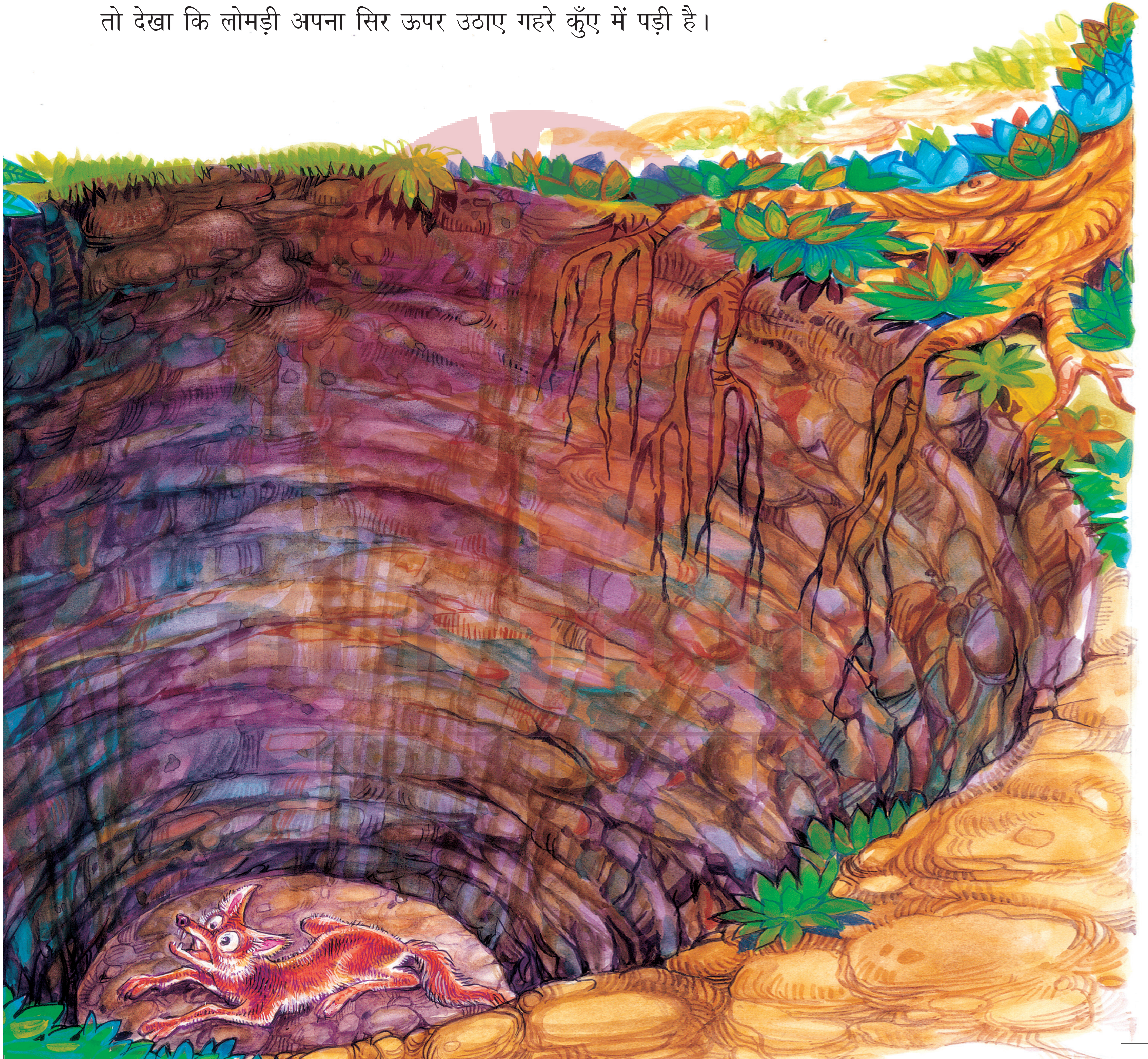


एक दिन एक खरगोश का पीछा करते हुए लोमड़ी गहरे कुँए में गिर गई।

चरते-चरते बकरी कुँए के पास पहुँची तो उसने सुना कि कोई कुँए के भीतर चिल्ला रहा है, ''बचाओ! मुझे बचाओ!!''



बकरी ने इधर-उधर देखा, ‘‘किसकी आवाज है यह?’’ वह कुँए के पास गई और भीतर झाँका तो देखा कि लोमड़ी अपना सिर ऊपर उठाए गहरे कुँए में पड़ी है।

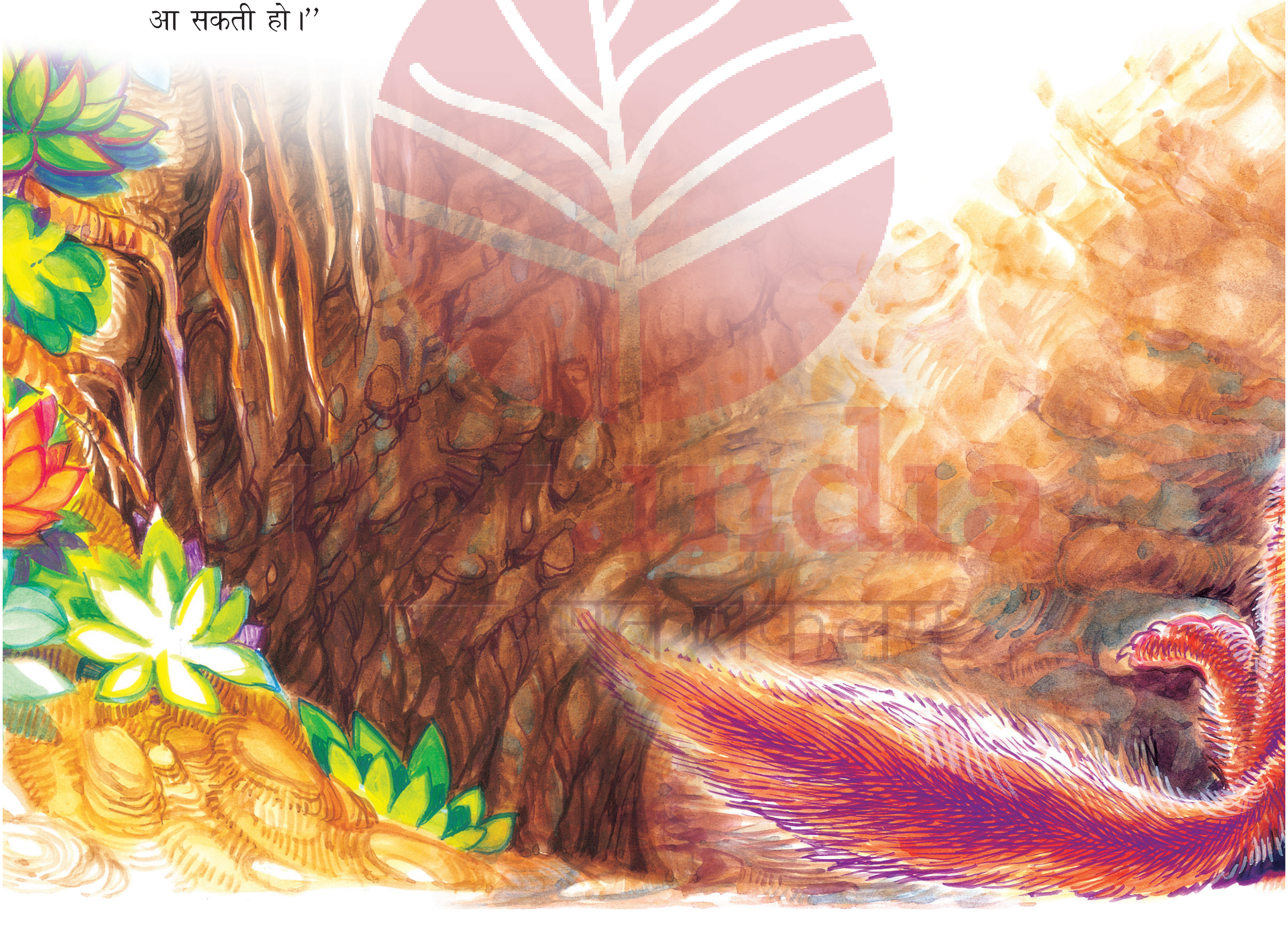


लोमड़ी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''मेरी दोस्त, मुझे बचा लो। कैसे भी करके मुझे इस अँधेरे कुँए से बाहर निकालो।''

बकरी ने कहा, ''तुम्हें बाहर निकाल कर मैं अपनी आफत क्यों खुद बुलाऊँ?''

लोमड़ी बोली, ''मैं तो गिरने से अंधी हो गई हूँ। मैं वादा करती हूँ, मैं तुम्हें नहीं खाऊँगी।''

''ठीक है, यदि तुम वादा करती हो, तो मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।'' बकरी ने एक मज़बूत एवं लंबी लता को तलाशा और उसे कुँए में लटका दिया।'' तुम इस लता के सहारे ऊपर चढ़कर आ सकती हो।''

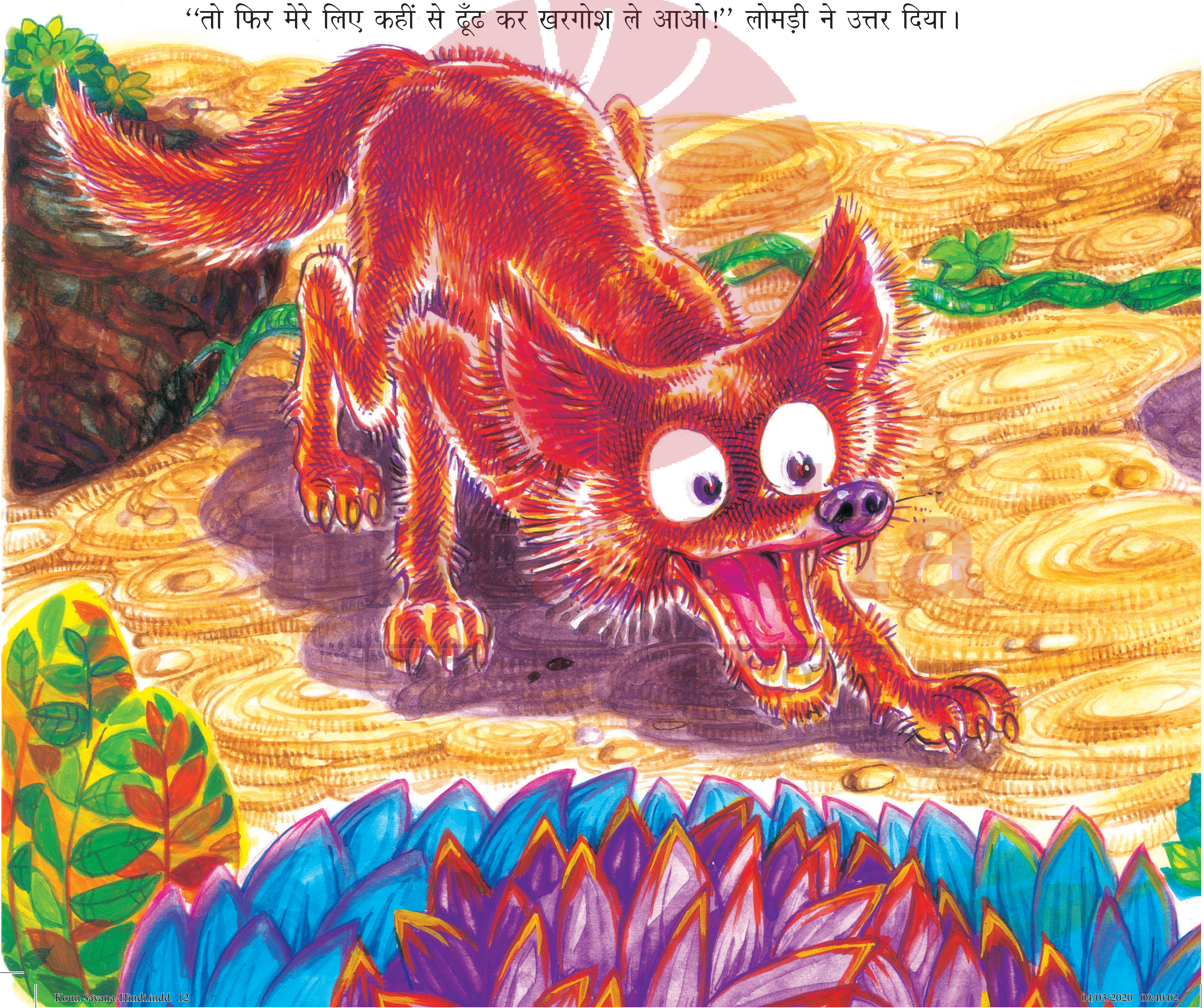




लोमड़ी उस लता के सहारे सुरक्षित बाहर आ गई। लेकिन यह क्या? बाहर आते ही उसने अपना रंग दिखा दिया। अब वह बकरी को पकड़ने के लिए दौड़ने लगी।

बकरी को अपने बचने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। तभी उसके मन में एक विचार आया। ‘‘मैं तो बूढ़ी हो गई हूँ। मेरे सूखे माँस में तुम्हें कहाँ स्वाद आयेगा?’’

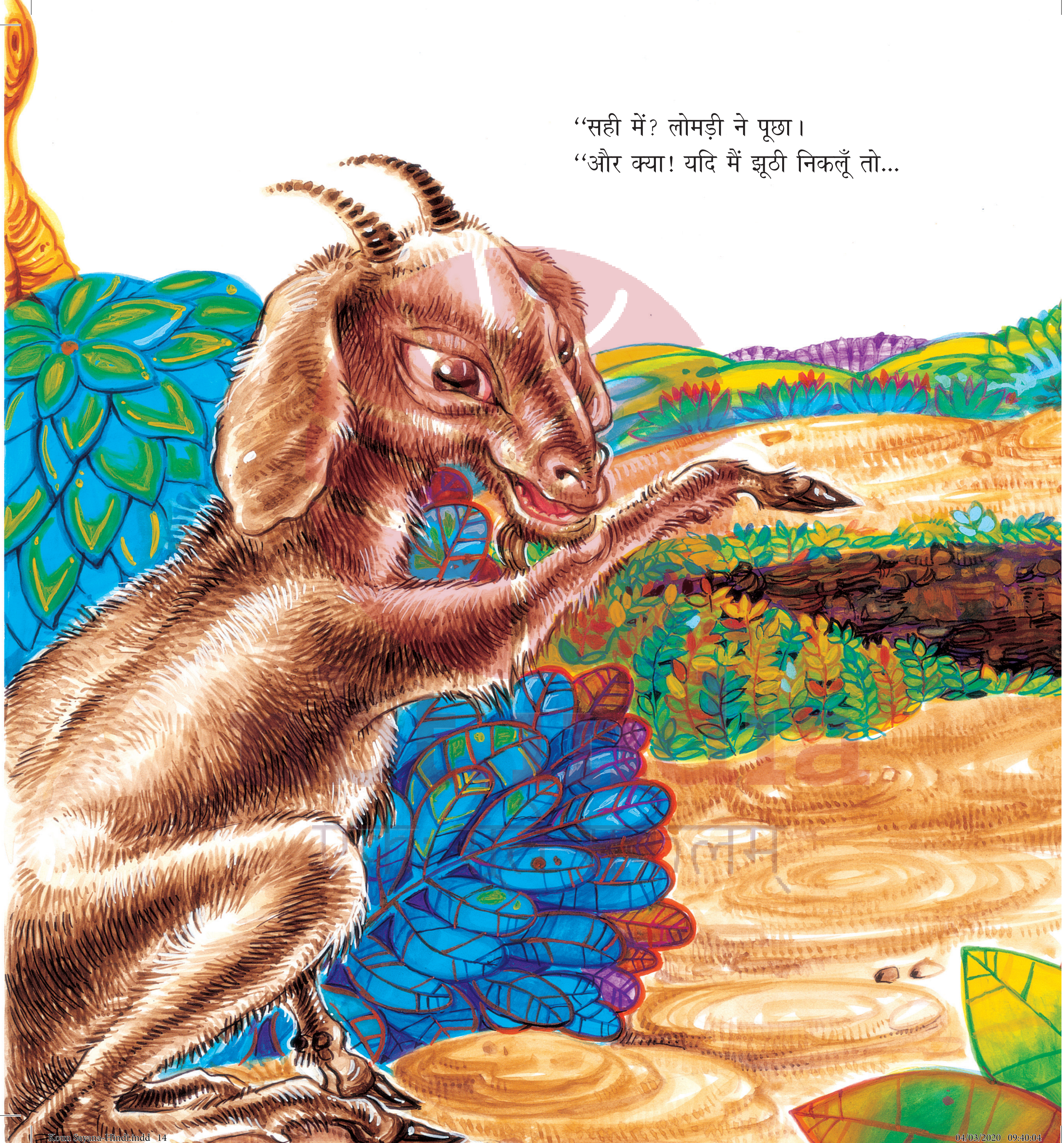
‘‘तो फिर मेरे लिए कहीं से ढूँढ कर खरगोश ले आओ!’’ लोमड़ी ने उत्तर दिया।





“यह कौन-सी बड़ी बात है मैंने अभी-अभी एक खरगोश उस कुँए में फेंका है।” बकरी ने उत्तर दिया।

‘‘सही में? लोमड़ी ने पूछा।
‘‘और क्या! यदि मैं झूठी निकलूँ तो...





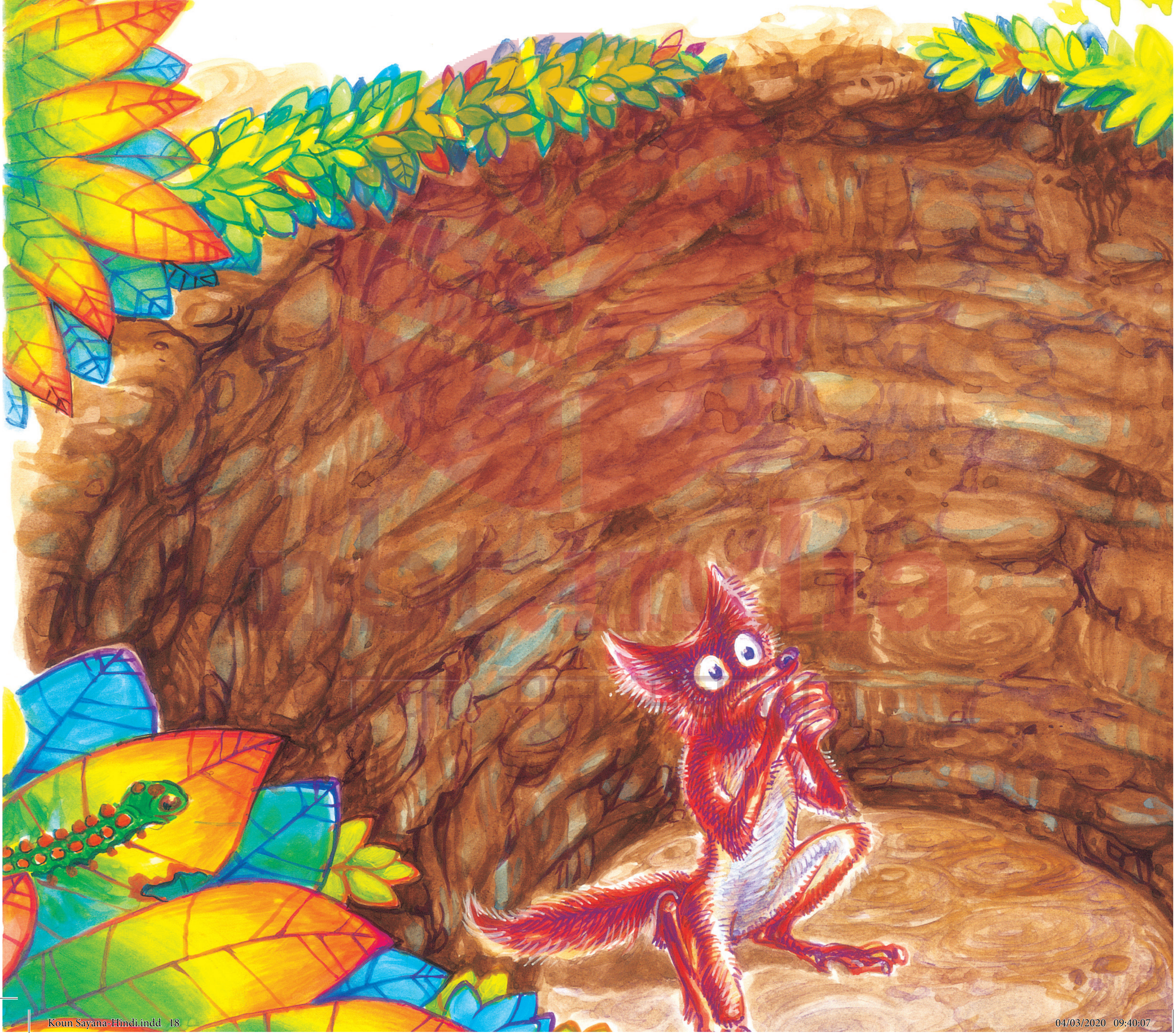
...तो तुम मुझे खा जाना।'' यह कहते हुए
बकरी लोमड़ी को कुँए के पास ले गई।

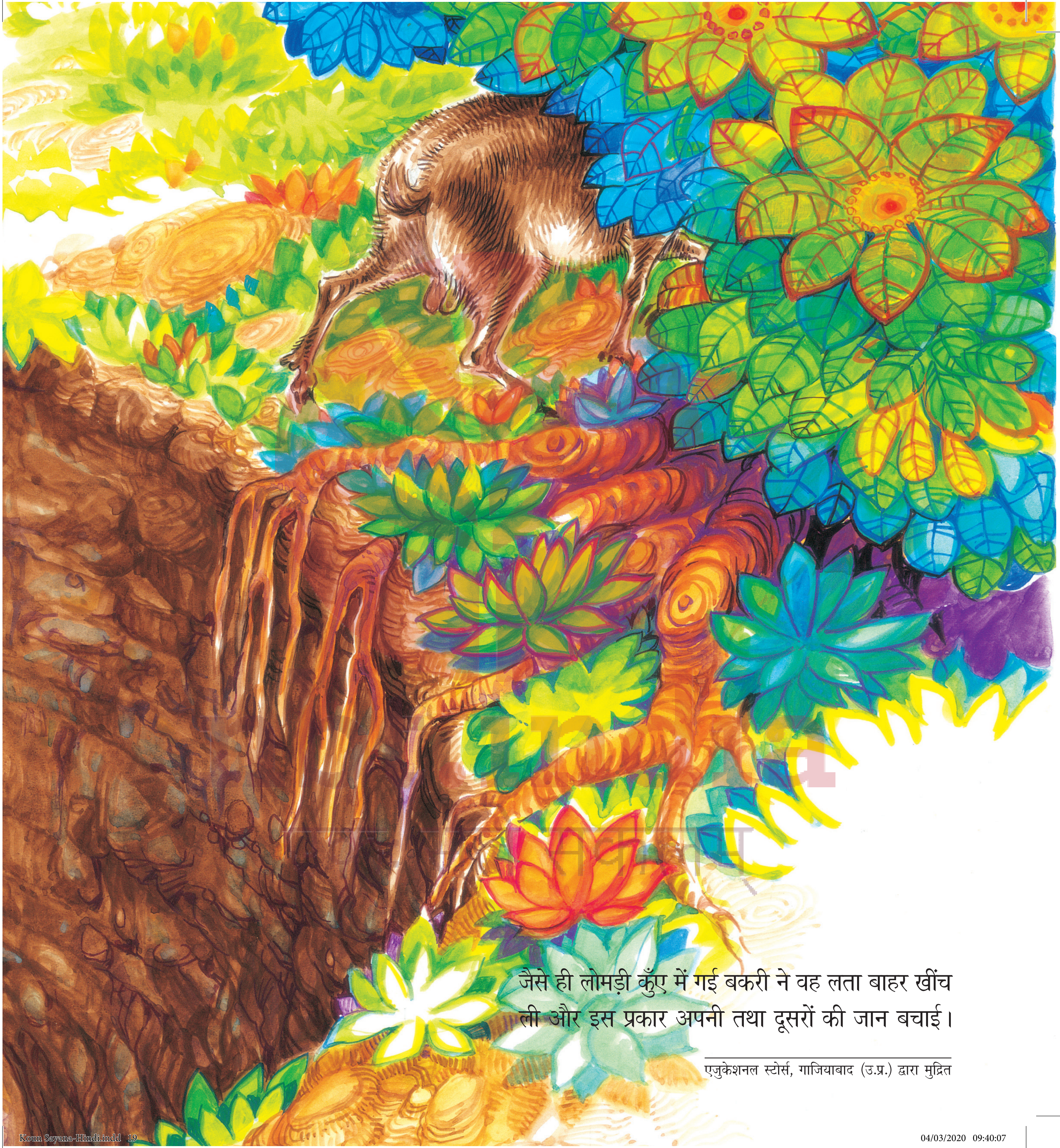


लोमड़ी अधीर हो रही थी। उसने कुँए में झांकते हुए पूछा, “कहाँ है खरगोश?”



बकरी ने उत्तर दिया, ''दोस्त! अभी आप कह रहीं थी ना कि आपको कम दिख रहा है। इसीलिए आपको खरगोश दिख नहीं रहा है। एक काम करो, इस लता के सहारे कुँए में उतर जाओ, वहाँ आपको खरगोश मिल जायेगा। जब आप खरगोश से अपना पेट भर लें, तो इसी लता के सहारे तुम बाहर आ जाना।





जैसे ही लोमड़ी कुँए में गई बकरी ने वह लता बाहर खींच ली और इस प्रकार अपनी तथा दूसरों की जान बचाई।

एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित